देदीप्य जोशी
गीताश्री
प्रतिमा सिन्हा
भवतोष पांडेय
अश्वनी सिंह
प्रियम्वदा रस्तोगी
रवींद्र त्रिपाठी
रंजू भाटिया
हीरेंद्र झा
हफ़ीज़ किदवई
सोनाक्षी सिंह
संजीव चंदन
अनुपम नवरूप गांगुली
डॉ. रक्षा गीता
अमिताभ श्रीवास्तव
विभा रानी
विनायक मिश्र
अवशेष चौहान
डॉ. प्रकाश हिंदुस्तानी
अनुराग आर्या
सौम्या अपराजिता
आशुतोष गोवारिकर
ममता सिंह
निर्देश निधि
रश्मि रविजा
दिनेश श्रीनेत
सत्यजित राय

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईजिन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

जनवरी

2024

हम कैसा सिनेमा देखना चाहते हैं?

अनुक्रम

आवरण कथा

सिनेमा का एक और नया साल और मैं 10

देदीप्य जोशी

बर्फ़ पर कोई सूखी झाड़ी जल रही हो जैसे 15

गीताश्री

पैरेलल विद लाइफ हो सिनेमा 21

प्रतिमा सिन्हा

प्रतीकात्मक हों हिंसा, सेक्स और वीभत्स दृश्य 26

भवतोष पाण्डेय

कल, आज और कल का सिनेमा 31

अश्वनी सिंह

फिल्मों से हमारा इक्वेशन 36

प्रियम्वदा रस्तोगी

जिंदगी एक सफर है.. 42

रवींद्र त्रिपाठी

आप कैसा सिनेमा देखना चाहते हैं? 49

रंजू भाटिया

हमारे भीतर के नायक को जगाती फिल्में! 52

हीरेन्द्र झा

सिनेमा में एसेक्सुअल समाज भी दिखाई दे 56

हफ़ीज़ क़िदवई

कहाँ हैं बच्चों की फ़िल्में 61

सोनाक्षी सिंह

जाति और जेंडर के बहुआयामी यथार्थ की फिल्में पसंद 63

संजीव चंदन

आप कैसा सिनेमा देखना चाहते हैं? 67

अनुपम नवरूप गांगुली

सिनेमा के मायने 73

डॉ. रक्षा गीता

सिनेमा के सामाजिक सरोकार 78

अमिताभ श्रीवास्तव

रिश्तों की गहराई दिखे सिनेमा में 83

ममता सिंह

सिनेमा और मेरी रुचि 89

निर्देश निधि

समावेशी हो सिनेमा 94

रश्मि रविजा

हिंदी सिनेमा को अपनी ज़मीन तलाशनी होगी 98

दिनेश श्रीनेत

ताकि सनद रहे

2024 की प्रतीक्षित हिंदी फ़िल्में 102

अन्नपूर्णी का विवाद 108

मैं अटल हूं का प्रेस शो और जय श्री राम 110

एडविना वॉयलेट को श्रद्धांजलि 113

समकाल

अन्नपूर्णी (तमिल फिल्म) 117

विभा रानी

मैरी क्रिसमस 128

विभा रानी

शहर और सिनेमा

बनारस के टॉकीज 134

विनायक मिश्र

क्लासिक फिल्म

पड़ोसन 142

अजय ब्रह्मात्मज

आकलन

2023 के छह कलाकार 150

अवशेष चौहान

गान ज्ञान

“जो भी है, बस यही एक पल है” 160

डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी

गीत-संगीत

खय्याम 165

अनुराग आर्या

दादा साहेब फाल्के सम्मान

पंकज मालिक 171

सौम्या अपराजिता

विस्तृत बातचीत: आशुतोष गोवारिकर 179

दिग्गज दृष्टि

हमारी फ़िल्में और दर्शकों की पसंद 209

सत्यजित राय

मेरी बात

फिल्म ईजिन सिनेमाहौल के तीसरे अंक की आवरण कथा है - हम कैसा सिनेमा देखना चाहते हैं? यह एक ऐसा सवाल है जो हम सभी के को मथता रहता है, लेकिन इसका कोई ठोस जवाब नहीं मिल पाता है। हमारी कोशिश रही कि फिल्म के दर्शकों से इस पर चर्चा की जाए। हम सभी सिनेमा के दर्शक हैं। समीक्षक भी पहले एक दर्शक ही होता है और आम दर्शक भी फिल्म देखने के बाद की प्रतिक्रियाओं में समीक्षा कर रहा होता है। इन दिनों सोशल मीडिया के उभार और प्रसार के बाद हर दर्शक अपने समूह में देखी गयी फिल्म के बारे में निजी राय, विचार और टिप्पणी लिखना और शेयर करता है। अगर आप सरसरी निगाह भी डालें तो अधिकांश फिल्मों के बारे में दर्शकों की राय मोटे तौर पर नकारात्मक रहती है। उनकी राय और टिप्पणियों में असंतुष्टि झलकती है।

मुझे कई बार लगता है कि असंतुष्टि दर्शकों का मूल स्वभाव है। यह स्वाभाविक भी है। पैसा और समय खर्च करने के बाद किसी फिल्म से उन्हें संतुष्टि नहीं मिलती तो जाहिर है कि वे अपनी प्रतिक्रियाओं में कलाकार और निर्माता-निर्देशकों की आलोचना करते हैं। फिल्मों के बारे में इन दिनों पैसावसूल शब्द चलने लगा है। मैं तो मानता हूं कि यह समयवसूल भी होना चाहिए। फिर भी मैं यह रेखांकित करना चाहूंगा की तथ्यात्मक रूप से यह जानी-समझी बात है कि

अधिकांश दर्शकों को अपनी चाहत और पसंद ही नहीं मालूम। उन्हें यह तो समझ में आता है कि देखी हुई फिल्म उन्हें पसंद नहीं आ रही है, लेकिन पूछने पर वे बात नहीं पाते कि उन्हें क्या पसंद नहीं आया या कैसी फिल्में पसंद हैं?

हिंदी फिल्मों ने पिछले 90-92 सालों में अनेक विषयों, मुद्दों और परिवेशों को चित्रित किया गया है। समाज के ज्वलंत पहलुओं पर फिल्में बनी हैं। फिल्मों ने जागृति और जागरूकता फैलाई है। हमें अवगत और सचेत करने के साथ मार्ग भी दिखाया है। फिल्में हमें अंतर्दृष्टि देती हैं। समाज और व्यक्ति के मन-प्रांतर की कथाओं से आगाह करती हैं। गौर करें तो हम सभी ने फिल्मों के जरिए अनेक सामाजिक कलह और सुलह देखे और समझे हैं। हिंदी फिल्में अपने रूप, विधान और प्रस्तुति में ऊपरी तौर पर एक जैसी दिखने के बावजूद निर्देशक और लेखक विशेष की दृष्टि से भिन्नता हासिल कर लेती हैं। फिल्में हमें विश्वास देती हैं। सकारात्मक भी बनती हैं। बुरे से बुरे दौर में साधारण से साधारण फिल्में भी दर्शकों को मनोरंजन और आनंद देती हैं। चूँकि भारतीय समाज में अभी मनोरंजन के लिए सिनेमा से सस्ता और सुलभ कोई और माध्यम नहीं है, इसलिए हम सभी फिल्में देखते हैं। हर तरह की फिल्में देखते हैं और फिर उन्हें अच्छी या बुरी कहते और बताते हैं।

आजकल फिल्मों की कमाई और कामयाबी ने फिल्मों की अच्छी-बुरी श्रेणी के अंतर को धुंधला कर दिया है। निर्माता और निर्देशक फिल्मों की कमाई के

आंकड़े दिखाकर यह साबित करते हैं कि उनकी फिल्में अधिकाधिक दर्शक देख रहे हैं। दर्शकों के इस आधिक्य को वे फिल्मों की श्रेष्ठता मान लेते हैं। एक विचित्र सत्य है कि सर्वाधिक लोकप्रिय भारतीय फिल्म के दर्शकों की संख्या देश की कुल आबादी का चंद्र प्रतिशत ही है। कायदे से 10% आबादी भी फिल्मों की दर्शक नहीं है। जब दर्शक ही नहीं हैं तो फिर सिनेमा के विषय और प्रस्तुति में विविधता और विस्तार कैसे होगा। सिनेमा भी एक उत्पाद है। दर्शक इस उत्पाद के ग्राहक हैं। आमतौर पर हर निर्माता-निर्देशक फिल्मों की आलोचना किए जाने पर यही कहता है कि दर्शक जो चाहते हैं, वही हम परोसते हैं। दर्शक क्या चाहते हैं? यह पिछली फिल्मों की सफलता से निर्माता, निर्देशक और कलाकार तय करते हैं। वे उसी सफलता को दोहराना चाहते हैं। फिल्मों की सराहना, तारीफ या प्रशंसा उनके लिए अधिक मायने नहीं रखती। फिल्म बिजनेस से जुड़ा हर व्यक्ति यही तर्क देता है कि फिल्मों में जो निवेश होता है, उसकी वापसी होनी चाहिए।

सिर्फ हिंदी फिल्मों की ही बातें करें तो इसे अभी और गहरा एवं विस्तृत होना है। समाज के सभी परतों में कुलबुला रही कहानियों को प्रस्तुत करना है। वंचित और संपन्न दोनों ही सिरों पर मौजूद नागरिकों के साथ उनके बीच के दूसरे वर्ग और समूहों को भी सिनेमा में शामिल करना होगा। अभी देश के अनेक कोने फिल्मों से अनछुए हैं। कुछ समूह, समुदाय, परिवेश सिनेमा में आ ही नहीं पाए हैं। वास्तव में हिंदी फिल्में एक परिपाटी का पालन करती है। इस परिपाटी में थोड़ा